315hi23

23

प्रथम विश्व युद्ध और रूसी क्रांति

प्रथम विश्व युद्ध तथा रूसी क्रांति उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ के वर्षों में हुए परिवर्तनों और शृंखलाबद्ध घटनाओं का परिणाम थी। दोनों ही बहुत बड़ी महत्त्वपूर्ण घटनाएं थीं और इनसे लाखों लोग प्रभावित हुए थे। दोनों ने समग्र रूप से बीसवीं शताब्दी को प्रभावित किया तथा उसे नया स्वरूप प्रदान किया।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आपः

- कुछ ऐसे घटकों को पहचान पाएँगे जो 1914 में युद्ध के कारण बने और इस बात पर चर्चा कर सकेंगे कि क्या युद्ध के ऐसे घटक आज के विश्व में भी मौजूद हैं;
- 1917 के रूसी साम्राज्य में ही यह क्रांति कैसे संभव हुई तथा किसी अन्य देश में क्रांति में क्यों नहीं हुई इसकी व्याख्या कर सकेंगे;
- दोनों युद्धों और रूसी क्रांति के तात्कालिक और दीर्घकालिक परिणामों का विश्लेषण कर सकेंगे; और
- भारत के लिए इस युद्ध और इस क्रांति की क्या सार्थकता है; इस पर चर्चा कर सकेंगे।

23.1 इतिहास में प्रथम विश्व युद्ध पिछले युद्धों से किस प्रकार भिन्न था

स्पेन, नीदरलैंड, तीन स्केन्डीनेवियन राष्ट्रों और स्विटजरलैंड को छोड़कर यूरोप के सभी राष्ट्र ऐसे युद्ध में सम्मिलित थे जिन्होंने संपूर्ण विश्व को हिंसा और दुःख से जोड़ दिया। अन्य क्षेत्रों, विशेष रूप से उपनिवेशों पर शासन करने वाले राष्ट्रों के लिए उनकी सेनाओं को भी इस युद्ध में लड़ाई लड़नी पड़ी। उदाहरण के लिए, भारतीय सैनिकों को भारत से बाहर ब्रिटेन के लिए लड़ाई लड़नी पड़ी। यह अनुमान लगाया गया है कि ब्रिटेन की तरफ से कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका और भारत (जिन क्षेत्रों पर ब्रिटेन का शासन था) से 30 लाख से अधिक सैनिक आए थे। इन युद्धों का क्षेत्र व्यापक था अर्थात इस युद्ध के क्षेत्रों के प्रदेश में यूरोप, एशिया, अफ्रीका और प्रशांत महासागर सम्मिलित थे। पहली बार लगभग समग्र विश्व के लोग ऐसे युद्ध में सम्मिलित थे, जिसे वे विश्व युद्ध के रूप में जानते थे।

युद्ध में नई प्रौद्योगिकियों, हवाई जहाजों, टैंकों और पनडुब्बियों का उपयोग किया गया था, जिन्हें इससे पहले के युद्धों में नहीं देखा गया था। परन्तु साधारण ढंग से भूमि पर लड़े जाने के अतिरिक्त ज्यादातर लोग इसे इसलिए याद रखेंगे कि युद्ध की ज्यादातर फोटो में सैनिकों को भूमि पर खाइयों में लड़ते दिखाया गया था। समुद्री युद्ध दक्षिण अटलांटिक और प्रशांत महासागर में हुआ। ब्रिटेन तथा इसके मित्र राष्ट्रों की ओर से 100,000 से अधिक सैन्य टुकड़ियों के साथ अमेरीका पहली बार विश्व स्तर पर सम्मिलित हुआ था।

इस विश्व युद्ध के कारण लोगों को भारी मात्रा में सैनिकों के रूप में संगठित किया गया, जबकि महिलाओं को शहरों में कई कार्यों के लिए तथा युद्ध क्षेत्रों में उन्हें नर्स के रूप में रखा गया। सरकारों ने यह सुनिश्चित करने के लिए अनेक उपाय किए कि उनकी अपनी सेनाओं को किसी वस्तु की कमी नहीं होगी। जैसे वे लोगों को संगठित करते थे वैसे ही उन्होंने खाने के लिए किसानों से खाद्यान्न एकत्रित किए। उन्होंने सेना की उपकरण और गोलाबारूद संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसी वेतन पर अधिक लंबे समय तक कार्य करने के लिए कामगारों के अधिकारों को समाप्त कर दिया। खाद्य और रोजमर्रा के उपभोग वाली वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि हो गई क्योंकि ज्यादा निवेश युद्ध संबंधी उद्योगों और युद्ध संबंधी अन्य आवश्यकताओं पर किया गया। सामान्यतः लोगों में निराशा का भाव था।

हमें यह याद रखना चाहिए कि युद्ध अथवा युद्ध से आई विपत्तियों के कारण 10 लाख लोग मारे गए, 20 लाख लोग घायल हो गए और लाखों लोग शरणार्थी अथवा बेरोजगार हो गए थे क्योंकि नगर और उद्योग नष्ट हो गए थे। देशों के सीमा क्षेत्रों पर रहने वाले ही नहीं वरन राष्ट्र के आंतरिक भागों में रहने वाले लोग भी बेघर हो गए थे। युद्ध के इतिहास में पहली बार असैनिक जन समुदाय प्रभावित और घायल हुआ। असैनिक क्षेत्रों पर बम डाले गए और युद्ध के कारण अकाल तथा महामारियाँ फैलीं जिनसे लाखों नागरिकों की मौत हो गई।

जब यह युद्ध शुरू हुआ तो लोगों ने सोचा कि यह युद्ध छोटा होगा, लेकिन यह चार वर्ष तक चला। आप कल्पना कर सकते हैं कि लगातार चार वर्ष तक युद्ध में संलग्न रहने वाले राष्ट्रों के लोगों का जीवन कैसा रहा होगा। इसने मौजूदा सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक ढाँचे को नष्ट कर दिया। संपूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। चारों ओर फैलने तथा पहली बार इतने बड़े स्तर पर विरोधी राष्ट्रों द्वारा सभी संसाधनों को संगठित करने के कारण इसे प्रथम विश्व युद्ध के रूप में जाना गया।

इन सब कारणों से इस युद्ध को विश्व इतिहास का निर्णायक बिन्दु माना जाता है।

23.2 युद्ध के कारण

प्रथम विश्व युद्ध के कारण जटिल हैं, हालांकि यह युद्ध एक विशेष घटना के कारण प्रारंभ हुआ था जो कहीं भी, किसी भी समय घट सकती थी। सर्बिया और आस्ट्रिया में शत्रुता थी जिसके कारण हिब्सबर्ग साम्राज्य के सिंहासन के उत्तराधिकारी आर्क ड्यूक फ्रेंज फरदिनांद की 1914 में साराजीवों में हत्या कर दी गई थी। यही घटना मुख्य कारण बनी जो प्रथम विश्व युद्ध के रूप में परिवर्तित हो गई।

एक घटना के ऐसे विध्वंसकारी परिणाम क्यों हुए, जिनके कारण अंततः संपूर्ण विश्व में चार वर्ष तक युद्ध चला?

आप प्रारंभिक पाठों में उपनिवेशों हेतु दौड़ के बारे में पहले ही पढ़ चुके हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कैसे पूर्ण रूप से साम्राज्यवाद प्रणाली ने स्थान बनाया। उदाहरण के लिए, 1876 में अफ्रीका का 10 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा यूरोप के शासन के अधीन नहीं था परन्तु 1900 तक वहाँ 90 प्रतिशत से अधिक उपनिवेश बन गए। आप देख चुके हैं कि जर्मनी इस दौड़ में पीछे रह गया था लेकिन उसने भी यह महसूस करना शुरू कर दिया कि शासन करने के लिए उसे भी अपने उपनिवेश स्थापित करने चाहिए। 1914 तक ये शक्तियां अपने प्रभाव क्षेत्र को बढ़ाने, अपने अधीन और अधिक क्षेत्र लाने तथा विश्व के संसाधनों में अधिक भागीदारी करने को तैयार थीं।

ज्यादातर विश्व इनमें पहले से ही बँट चुका था, प्रत्येक अपने अधीन वाले क्षेत्रों के आर्थिक तथा राजनीतिक नियंत्रण विश्व को पुनः व्यवस्थित करके बढ़ा सकते थे अथवा दूसरे के खर्च पर अपने हिस्से को एक दूसरे से लड़कर बढ़ा सकते थे। तथापि उनमें से किसी ने भी इतने बड़े युद्ध के बारे में नहीं सोचा था, फिर भी संघर्ष की संभावना हमेशा रहती थी।

वे दूसरे देश में नए क्षेत्र प्राप्त करने अथवा पहले से अपने अधीन वाले क्षेत्रों की सुरक्षा करने के लिए छोटे–छोटे युद्ध करते थे; और कभी–कभी वे अपने प्रतिद्वंदी को रोकने के लिए दूसरी शक्ति का सहयोग करते थे। जर्मनी के बिस्मार्क ने 1879 में ऑस्ट्रिया–हंगरी के साथ सहयोग किया था, जो द्विपक्षीय सहयोग के रूप में जाना जाता था। 1894 में जब इटली इसमें सम्मिलित हो गया तो यह त्रिपक्षीय सहयोग बन गया। दूसरी ओर 1884 में फ्रांस ने रूस के साथ सहयोग किया, 1904 में फ्रांस ने ब्रिटेन के साथ करार किया और 1907 में ब्रिटेन ने रूस के साथ संधि की। यह त्रिपक्षीय संधि के रूप में जानी जाती है।

यूरोप के नेताओं ने सोचा कि इन सहयोगों से शक्ति के संतुलन के माध्यम से युद्ध रोका जा सकेगा। वास्तव में यह हुआ कि इन सहयोग से देश एक–दूसरे से बंध गए थे। जब एक देश युद्ध करता तो अपने सहयोग के दूसरे देशों को उसकी सहायता के लिए इस युद्ध में सम्मिलित होना पड़ता था। इस प्रकार साम्राज्यवादी राष्ट्रों में प्रतिद्वंद्विताएँ और संघर्ष इस युद्ध के मुख्य कारण बन गए।

राष्ट्रीय आंदोलन उन्नीसवीं शताब्दी की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ थीं। उन्नीसवीं के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में राष्ट्रवाद में भी परिवर्तन आया। विकसित पूंजीवादी राष्ट्रों में यह नियंत्रण के क्षेत्रों के विस्तार और उसकी सैन्य शक्ति की वृद्धि से जुड़ गया। फ्रांस की क्रांति इसकी 'स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व' के आदर्शों से आई। दबाव का बोध अब नहीं था। ये राष्ट्र एक देश में प्रचलित अक्षुण्णता के विचार से और अधिक नहीं जुड़ना चाहते थे। दूसरी ओर बहु–राष्ट्रीय साम्राज्यों जैसे, ऑस्ट्रिया–हंगरी और रूस साम्राज्य में लोग स्वयं को मुक्त करना और स्वतंत्र राष्ट्रों का निर्माण करना चाहते थे, सभी बड़ी शक्तियां उसका विरोध करती थीं।

इस प्रकार, बड़ी शक्तियां अभूतपूर्व शस्त्रास्त्रों की दौड़ में लग गईं तथा उन्होंने विशाल थल और जल सेनाएं तैयार कर लीं। सैन्यवाद विदेशी नीति का मुख्य पहलू बन गया घरेलू नीतियों का लक्ष्य अपने नागरिकों का कल्याण करने के बजाय अपनी सैन्य शक्तियों तथा सामर्थ्य को बढ़ाना था। जन संचार को इसमें मुख्य साधन बनाया गया समाचार पत्रों ने आक्रामक राष्ट्रवाद का प्रचार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1901 में अपेक्षाकृत कुछ लोगों को कहीं भी वोट डालने की अनुमति दी गई और महिलाओं को व्यावहारिक रूप से कहीं भी वोट डालने की अनुमति नहीं थी। अतः बहुत कम लोग ही अपनी सरकारों द्वारा बनाई गई नीतियों से प्राभावित होते थे। सरकारें पूंजीपतियों और भू–स्वामियों के हितों का ध्यान रखती थीं और इनके प्रभाव में सरकारें अपनी नियंत्रणाधीन क्षेत्रों में वृद्धि करने के लिए आपस में प्रतिस्पर्धा करती थीं। यद्यपि इस प्रतिस्पर्धा में आम आदमी की भागीदारी कम थी। फिर भी युद्ध प्रारंभ होने पर लोग अपने राष्ट्रों की सहायता के लिए निकल पड़ते थे।

लोग आधुनिक युद्ध की विभीषिका को अभी तक नहीं समझ पाए थे। यह युद्ध का प्रभाव था कि लोगों ने इस युद्ध पर पुनर्विचार किया तथा शांति की मांग शुरू कर दी।

23.3 युद्ध की प्रक्रिया

हम युद्ध अथवा मुख्य आंदोलनों की प्रक्रिया की विस्तार से चर्चा नहीं करेंगे। परन्तु आपको यह जान लेना चाहिए कि ऑस्ट्रिया ने सरबिया में हुई हत्या को युद्ध का कारण बताया और उसने इसका बदला लेने का निर्णय लिया तो इसके त्रिपक्षीय सहयोगी राष्ट्र जर्मनी और इटली इसके पक्ष में आ गए तथा अन्य शक्तियां (ब्रिटेन, फ्रांस और रूस) विरोधी पक्ष में आ गईं।

जर्मनी ने फ्रांस की ओर सेनाएं भेजीं तथा ऐसा प्रतीत हुआ कि उसे सफलता प्राप्त हो रही है, तब रूस ने पूर्व से जर्मनी तथा ऑस्ट्रिया पर आक्रमण किया। इस तरह यह युद्ध काफी जटिल हो गया। जमीन पर, खाइयों में युद्ध लगातार चार वर्षों तक चला, क्योंकि दोनों ही पक्ष बराबर थे। खाइयां खोदने के लिए उपनिवेशों के श्रमिकों का उपयोग किया गया। तत्पश्चात यह युद्ध एशिया और अफ्रीका के क्षेत्रों में फैल गया।

इस युद्ध में प्रौद्योगिकी के उपयोग का अर्थ था, सभी राष्ट्रों के अधिक से अधिक लोगों का हताहत होना। उदाहरण के लिए, सोमी के युद्ध के पहले दिन 60,000 ब्रिटिश सैनिक मारे गए थे अथवा घायल हुए थे।

इस युद्ध की प्रक्रिया के दौरान इटली ने पक्ष बदल लिया। अप्रैल 1917 में अमरीका ने भी जर्मनी से युद्ध की घोषणा कर दी। इस स्थिति में रूस साम्राज्य का क्रांतिकारी आंदोलन निर्णायक घटक था।

अक्तूबर, 1917 में रूसी क्रांति सफल हुई और जब वहाँ कम्युनिस्ट सत्ता में आए तो रूस युद्ध से अलग हो गया। उन्होंने मार्च 1918 में जर्मनी के साथ शांति संधि पर हस्ताक्षर किए। यह संधि रूस के लिए बहुत अप्रिय थी, परन्तु रूस में लेनिन के नेतृत्व वाली नई सरकार इससे सहमत थी, क्योंकि वे शुरू से ही युद्ध का विरोध कर रहे थे।

ये जटिल मामले न सिर्फ जर्मनी, बल्कि ब्रिटेन और फ्रांस के लिए भी थे, नया रूस बड़ा दुश्मन प्रतीत होता था, क्योंकि वे मूल रूप से साम्यवाद के विरोधी थे।

अतः 1918 के प्रारंभ से युद्ध की नियति बदली और जर्मन सेनाओं ने बदला लेना शुरू किया, तो ब्रिटेन तथा फ्रांस शांति के लिए सहमत हो गए। जर्मनी के कामगारों ने उसी प्रकार क्रांति की धमकी दी, जिस प्रकार से रुस के कामगारों ने दी थी। नवम्बर, 1918

में युद्ध विराम लागू हुआ और तत्पश्चात सभी शक्तियों ने मिलकर रूस में क्रांति को असफल बनाने के लिए अपनी ताकत लगा दी। इस बारे में आप अगले भाग में कुछ और जान सकेंगे।

पाठगत प्रश्न 23.1

1. प्रथम विश्व युद्ध में कौन–कौन से नए हथियार उपयोग में लाए गए थे?

   ____

2. 1914 तक किए गए दो मुख्य अंतर्राष्ट्रीय सहयोगों के नाम बताइए।

   ____

3. प्रथम विश्व युद्ध से कितने लोग प्रभावित हुए थे?

   ____

4. प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय सैनिकों ने किसकी ओर से युद्ध किया था।

   ____

23.4 रूसी क्रांति, 1917

इस युद्ध के समाप्त होने से पहले 1917 में रूसी क्रांति आई थी। यह बोल्शेविक क्रांति के रूप में भी जानी जाती है, क्योंकि राजनीतिक समूह के रूप में बोल्शेविक ने इस क्रांति को सफल बनाने और इसकी नीतियों को भी निर्धारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यह इतिहास में पहली समाजवादी क्रांति थी और यह साम्यवादी आदर्शों से प्रेरित थी। पिछले पाठों में आप यह पढ़ चुके हैं कि साम्यवाद कैसे पूंजीवाद की तुलना में अधिक समानता और सामाजिक न्याय प्रदान करता है। यह क्रांति कामगारों–श्रमिक वर्ग और किसानों के आंदोलनों के परिणामस्वरूप आई।

1917 तक रूसी साम्राज्य लंबे युद्ध के परिणामों और देश के भीतर चल रहे राजनीतिक तथा सामाजिक आंदोलनों के दबाव में था। फरवरी 1917 तक रूस बहु–राष्ट्रवादी साम्राज्य था जिस पर तानाशाह द्वारा शासन किया जाता था, जो जार के रूप में जाना जाता था। इसका राज्य क्षेत्र विशाल था। इसमें मध्य एशिया का बड़ा भाग और पूर्वी यूरोप के भाग सम्मिलित थे। संस्थानों के कोई प्रतिनिधि नहीं थे, यहां कोई भी राजनीतिक अथवा व्यापारिक संगठन बनाने का अधिकार नहीं था। यहां चुनाव नहीं होते थे। कड़ी सेंसरशिप थी और लोगों को मनमाने तरीके से बंदी बना लिया जाता था। यहां कोई धार्मिक सहिष्णुता नहीं थी, इस साम्राज्य में दूसरे देशों के लोगों और अल्पसंख्यकों को रूस के नागरिकों के बराबर अधिकार प्राप्त नही थे क्योंकि जार, निकोलस द्वितीय रूसी रोमनोव वंश का था। जार ने यूरोप के सभी प्रजातांत्रिक आंदोलनों के विरुद्ध अपनी सैन्य और कूटनीतिक ताकत का उपयोग किया। इसके लिए यह यूरोप के सिपाही के रूप में जाना जाता है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में पश्चिमी यूरोप की तुलना में ये परिस्थितियां काफी कष्टकर तथा बहुत भिन्न थीं।

23.5 प्राचीन और नवीन

यद्यपि राजनीतिक प्रणाली निरंकुश बनी हुई थी तथापि अर्थव्यवस्था और समाज में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे थे, जिनसे नई महत्त्वाकांक्षाएं सृजित हुईं। नए विचार विकसित हुए तथा समाज के कई वर्ग जार के अत्याचारी शासन से असंतुष्ट थे। चूंकि उनके पास कोई संसदीय प्रणाली अथवा चुनाव नहीं थे जिनके माध्यम से वे जार की नीतियों के प्रति अपना विरोध व्यक्त कर सकते, इसलिए उन्हें क्रांति का मार्ग अपनाना पड़ा। समाज को प्रभावित करने वाली नीतियां बनाने के लिए उन्हें तानाशाही प्रणाली समाप्त करनी पड़ी। यूरोप के अन्य देशों और रूसी साम्राज्य में यह बहुत बड़ा अंतर था।

23.6 कृषि तथा असंतुष्ट किसान

किसान भी बहुत अधिक असंतुष्ट थे। पश्चिमी और मध्य यूरोप की तरह रूसी साम्राज्य में भी कृषक–दास स्वतंत्र थे हालांकि ऐसा बहुत बाद में 1861 के अंत में जाकर हुआ। इस भू–सुधार के बावजूद भू–अभिजात वर्ग मजबूत बना हुआ था और उसने किसानों का दमन करना जारी रखा था। साथ ही कृषकों के पास पर्याप्त भूमि भी नहीं थी। जनसंख्या का 80 प्रतिशत किसान थे, परन्तु उनके पास मुश्किल से 50 प्रतिशत भूमि थी। इस प्रकार भूमि की मांग जार के विरुद्ध क्रोध का मुख्य कारण थी क्योंकि उसने अपर्याप्त भू–सुधार द्वारा उन्हें निराश किया।

साथ ही मुक्त किसानों को भूमि और स्वतंत्रता के लिए भारी खामियाजा भुगतना पड़ा, क्योंकि जार बड़े जमींदारों को जरूरत से ज्यादा मुआवजा देकर उनसे सद्भाव और सहयोग बनाए रखना चाहता था। किसानों को भारी कीमत चुकानी पड़ी, जिससे वे हमेशा के लिए कर्जदार हो गए और उन्हें जमींदारों के लिए कम मजदूरी पर काम करने के लिए मजबूर होना पड़ा। किसानों पर करों का भी बहुत भार था।

कृषि हमेशा पिछड़ी रही, क्योंकि किसानों के पास इतना धन नहीं था कि वे अपनी भूमि सुधारने के लिए निवेश कर सकें और जमींदार सोचते थे कि मशीनें खरीदने के लिए क्यों पैसा खर्च किया जाए क्योंकि कम मजदूरी पर कृषक–श्रमिक मिल जाते थे।

किसानों के हित के सभी मामलों में अभिजात वर्ग ने जमींदारों का पक्ष लिया तथा किसानों के विद्रोहों को दबाने के लिए सेना भेजी। चूंकि कृषि रूसी अर्थव्यवस्था का मुख्य क्षेत्र थी और किसानों की जनसंख्या भी अधिक थी इसलिए कृषि का पिछड़ापन और किसानों का असंतोष इस क्रांति के मुख्य घटक बन गए। 19वीं शताब्दी के दौरान किसानों के विद्रोह जारी थे और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में ये सामान्य क्रांतिकारी आंदोलन के हिस्से बन गए।

23.7 औद्योगिकीकरण और श्रमिकों का असंतोष

रूसी साम्राज्य में श्रमिकों का आंदोलन यूरोप के अन्य भागों की तुलना में सशक्त तथा ज्यादा राजनीतिक था। यह यहाँ के औद्योगिकीकरण के स्वरूप और राजनीतिक परिस्थितियों से संबंध रखता था। पश्चिमी यूरोप की तुलना में रूस में औद्योगिकीकरण विलंब से आया था, लेकिन यह काफी तीव्र था। इसका अर्थ था कि यहाँ औद्योगिकीकरण की प्रारंभिक अवस्थाओं में विशाल श्रमिकों वाली कई बड़ी–बड़ी फैक्टरियां थीं। श्रमिक वर्ग के आंदोलन पश्चिमी यूरोप के देशों की तुलना में यहां तीव्र गति से विकसित हुए और

आपकी टिप्पणियाँ

यहां पूंजीवादी कमजोर हो गए। वे श्रमिक वर्ग के आंदोलन के समक्ष अपनी शक्ति को संचित नहीं कर पाए थे। 19वीं शताब्दी के अंतिम दशक में अनेक हड़तालें हुई तथा 1905 तक श्रमिकों ने क्रांतिकारी आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

रूसी साम्राज्य में श्रमिकों का आंदोलन अन्य देशों की तुलना में कहीं अधिक उग्रवादी तथा राजनीतिक था। यह दोनों तरह से अभिजात वर्ग के विरुद्ध था, जो उन्हें संगठन बनाने की अनुमति नहीं देता था और उनके नियोक्ताओं का पक्ष लेता था और श्रमिकों का आंदोलन उन नियोक्ताओं के खिलाफ था, जो फैक्टरियों के स्वामी थे और उनकी न्यूनतम मजदूरी तथा खराब कार्य की परिस्थितियों के लिए जिम्मेवार थे। उनका आंदोलन अन्य राष्ट्रों की तुलना में साम्यवाद की ओर अधिक उन्मुख था।

20वीं शताब्दी के प्रथम दशक तक महिलाओं की श्रमिक वर्ग और श्रमिक वर्ग के संगठनों में भागीदारी अच्छी–खासी थी। जिसके परिणामस्वरूप उनसे संबंधित मामले श्रमिकों के अधिकारों और महिलाओं की समानता विषयक चर्चाओं में प्रतिबिंबित होना शुरू हो गए थे। श्रमिक महिलाएं बड़ी संख्या में श्रमिक वर्ग के आंदोलनों में भाग लेने लगी थीं।

23.8 राष्ट्रीयताओं के बीच असंतोष

रूसी रोमेनोव राजवंश और अन्य राष्ट्रीय प्रदेशों में लगभग औपनिवेशिक संबंध थे इसलिए रूसी प्रदेशों में उद्योगों के विकास हेतु कच्चे माल के स्रोत के रूप में इन क्षेत्रों का उपयोग किया जाता था। आपको स्मरण होगा कि ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत भारत के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था। रूसी अभिजात वर्ग को समाप्त करने में काकेशियंस, पॉलिश, कजाख, लाटविएस, ऐस्टोनियंस जैसे राष्ट्रों और अन्य राष्ट्रों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

23.9 नेतृत्व तथा दूरदृष्टि

क्रांतिकारी आंदोलन को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि समर्पित नेतृत्व होना चाहिए, निश्चित आदर्शों द्वारा इसका मार्गदर्शन किया जाना चाहिए और परिवर्तन का एक कार्यक्रम होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, लोग विध्वंसकारी नहीं होने चाहिए, उनके पास ऐसा विचार होना चाहिए कि वे क्या निर्माण करना चाहते हैं। वे ऐसे संगठनों का गठन करने में समर्थ होने चाहिए जो उनके आंदोलनों को आगे बढ़ा सकें।

20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कई राजनीतिक समूह सक्रिय थे, परन्तु वे गैर कानूनी थे और वे गुप्त रूप से कार्य करते थे, जार के सिपाही उनकी खोज में लगे रहते थे और पकड़े जाने पर उन्हें कड़ी यातना और दंड दिया जाता था। तथापि उन्होंने राजनीतिक शिक्षा, राजनीतिक प्रचार–प्रसार और आंदोलनों के माध्यम से लोगों विशेष रूप से श्रमिकों और किसानों में चेतना का निर्माण करने में नेतृत्वपूर्ण और महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस आधार पर समाज के सभी वर्गों श्रमिकों, किसानों और सैनिकों, विद्यार्थियों, और अध्यापकों, सभी प्रकार के कर्मचारियों और महिलाओं के लाखों संगठनों का गठन किया गया। इनमें से कई संगठनों के राजनीतिक पार्टियों से घनिष्ठ संबंध थे और ये राजनीतिक चर्चाओं और विचारों के लिए प्रतिक्रियाशील थे।

सन 1917 में महिला संगठनों ने श्रमिक संगठनों के समान कामकाजी महिलाओं के हितों को प्रतिबिंबित करना प्रारंभ कर दिया था, तथापि महिलाओं के इस तरह से ध्यान आकृष्ट करने हेतु लगातार संघर्ष करना पड़ा। हालांकि जन आंदोलनों में महिलाओं की अत्यधिक भागीदारी होती थीं, तथापि अभी तक बहुत कम महिलाएं नेतृत्व करने की स्थिति में थीं।

महत्त्वपूर्ण राजनीतिक समूह जनवादी (19वीं शताब्दी के अंत में) और साम्यवादी क्रांतिकारी, विभिन्न प्रकार के उदारवादी तथा सामाजिक लोकतंत्रवादी (मार्क्सवादी) थे। सामाजिक लोकतंत्रवादियों की दो पार्टियां थीं – होल्शेविक (अर्थात रूस में बहुमत वाली) और मेंशेविक (अर्थात अल्पसंख्यक)। आपस में मतभेदों के परिणामस्वरूप अलग होने के बाद इनके ये नाम पड़े। इन समूहों में क्रांति लाने और रूसी समाज तथा राजनीतिक प्रणाली में परिवर्तन लाने के संबंध में विभिन्न विचारधाराएं थीं।

लेनिन 1917 की रूसी क्रांति का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण नेता था। दूसरा त्रोत्स्की था। दोनों ही बोल्शेविक थे। तथापि यह कहना उचित होगा कि यहां भी हजारों पुरुष और महिलाएं महत्त्वपूर्ण नेता थे जैसा कि हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में थे। उनके प्रयासों वीरता और बलिदानों के बिना क्रांति सफल नहीं हो सकती थी।

23.10 क्रांति के चरण

19वीं शताब्दी में रूसी क्रांतिकारी आंदोलन का उस समय विकास हुआ जब अभिजात वर्ग के कुछ सदस्यों ने यह महसूस करना शुरू कर दिया था कि जार की राजनीतिक प्रणाली अत्यधिक कष्टकर थी और रूसी समाज भी अन्यायपूर्ण था। उन्होंने विशेष रूप से कृषकों की हालत के बारे में सोचा। रूस कैसे प्रगति कर सकता था, जबकि उसके ज्यादातर लोगों की हालत इतनी खराब हो? अभिजात वर्ग के इन सदस्यों और नए उभरे मध्यमवर्ग ने बुद्धिजीवी वर्ग का गठन किया जो रूसी समाज तथा राजनीतिक प्रणाली की आलोचना करता था तथा इसके रूपांतरण के लिए काम करता था। इन्होंने गुप्त समाजों तथा छोटे राजनीतिक समूहों का निर्माण किया। ये कड़ी सेंसरशिप और राजनीतिक गतिविधि पर प्रतिबंध होने के कारण अपने विचारों का प्रचार–प्रसार करने के लिए खुले तौर पर आंदोलन अथवा काम नहीं कर सकते थे, इसलिए ये समर्पित क्रांतिकारी बन गए। इन्होंने संविधान और चुनावों की मांग की। कई महिलाएं सक्रिय क्रांतिकारी थी। जब वे पकड़ी जाती थीं तो उन्हें क्रूरता से दंड दिए जाते थे। इसके बावजूद भी आंदोलन आगे बढ़ रहा था।

जैसे ही श्रमिक और किसान अपनी जिंदगी के अन्यायों के लिए लड़ने हेतु आश्वस्त हो गए, उन्होंने अभिजात वर्ग के विरुद्ध भी संघर्ष करना शुरू कर दिया। जब इनका संपर्क क्रांतिकारियों से हुआ, तो दोनों आंदोलन और तीव्र हो गए। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में रूसी क्रांतिकारी आंदोलन व्यापक आधार वाला आंदोलन हो गया था, तथा 'क्रांति' एक नारा बन गई।

एकतंत्र पर पहला मुख्य जन आक्रमण 1905 में हुआ। यह महत्त्वपूर्ण क्रांतिकारी विद्रोह असफल रहा और इन आंदोलनों को दबा दिया गया। परन्तु क्योंकि लोग इस अनुभव से बहुत सारी महत्त्वपूर्ण सीख ले चुके थे, इसलिए बाद में लेनिन ने 1917 की क्रांति के लिए इसे 'पूर्वाभ्यास' का नाम दिया था। मुख्य माँगों में प्रजातांत्रिक गणराज्य, पूर्ण मताधिकार,

किसानों हेतु भूमि, श्रमिकों के लिए अधिक मजदूरी और कम कार्य–समय सम्मिलित थे। महिला की समानता, विभिन्न नागरिकताओं हेतु स्वनिर्धारण तथा मृत्युदंड समाप्त करने संबंधी अन्य माँगे थीं। पहली बार वहाँ आम हड़ताल हुई। सेना और नौसेना की टुकड़ियों ने भी विद्रोह कर दिया। सोवियत के रूप में प्रसिद्ध श्रमिक वर्ग के क्रांतिकारी संगठन का गठन किया गया। इसने क्रांति में अग्रणी भूमिका निभाई।

इसके बाद कई वर्षों तक दमन चलता रहा, परन्तु प्रथम विश्व युद्ध के बाद यह क्रांतिकारी आंदोलन पुनः सक्रिय हो गया और इसमें वे लोग पुनः सम्मिलित हो गए जिनमें से ज्यादातर लोगों ने युद्ध के प्रभाव को सीधे तौर पर महसूस करना और जार की नीतियों की प्रकृति को समझना प्रारंभ कर दिया था। कठपुतली के समान मंत्रिमंडल कार्य नहीं करता था तथा कमजोर संसद (दुमा) जन आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सकती थी।

1917 तक रूसी साम्राज्य के ज्यादातर लोगों ने निरंकुश वर्ग को हटाने तथा मुद्दों को अपने हाथों में लेने का निर्णय लिया। इस वातावरण में ब्रेड की कमी के कारण फरवरी क्रांति शुरू हुई और महिलाओं ने प्रदर्शन किया जिसमें उन्होंने उनका दमन करने वाले जार के बजाय अपने भाइयों और बहिनों की सहायता करने के लिए सैनिकों का आह्वान किया। इस युद्ध से ऊबे हुए सैनिकों ने भी विद्रोह करने वाले लोगों पर गोलियां नहीं चलाई।

कुछ दिनों बाद मांग आई 'एकतंत्र मुर्दाबाद'। राजधानी शहर सेंट पीटर्सबर्ग की गलियों में लाल झंडों का प्रभुत्व कायम हो गया तथा साम्राज्य का सारा क्षेत्र क्रांति के नारों से गूंजने लगा। एकतंत्र को समाप्त कर उसके स्थान पर अस्थायी सरकार बनाई गई। श्रमिकों और किसानों ने इस परिवर्तन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा बुर्जुआ वर्ग ने इसका समर्थन किया। यहां तक कि सैनिकों ने भी क्रांतिकारी ताकतों का पक्ष लिया। सेंट पीटर्सबर्ग का नाम बदलकर पेट्रोग्रेड कर दिया गया।

इस अस्थायी सरकार ने राजनीतिक स्वतंत्रता हेतु शर्तें बनाईं जैसे संगठनों का गठन करने का अधिकार तथा वाक् स्वतंत्रता, परन्तु इसने लोगों को प्रभावित करने वाली नीतियों में कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन नहीं किया। यह ऐसा नहीं कर सकती थी क्योंकि इस सरकार में जमींदार और पूंजीपति के हितों को प्रस्तुत करने वाली पार्टियों का प्रभुत्व था अतः बोल्शेविक पार्टी के साथ श्रमिकों, सैनिकों और किसानों ने अपने आंदोलनों को जारी रखा जो 1917 की अक्तूबर बोल्शेविक क्रांति की पराकाष्ठा पर पहुँचा।

1917 में लोगों की आकांक्षाओं के अनुसार बोल्शेविक ही एकमात्र राजनीतिक समूह था। उन्होंने युद्ध को तत्काल समाप्त करने का आह्वान किया; उन्होंने किसानों के लिए जमीन, उद्योगों पर श्रमिकों के नियंत्रण तथा स्वाधीनता हेतु नागरिकता के अधिकार की मांग की। संपूर्ण राष्ट्र के श्रमिकों, किसानों और सैनिकों के सभी जन संगठनों में शांति! रोटी! भूमि! प्रजातंत्र! नारे बन गए तथा बोल्शेविकों को इन संगठनों में बहुमत में होने के कारण उन्हें इनका नेतृत्व करने के लिए चुना गया'

अक्तूबर 1917 की क्रांति का जनाधार था और अस्थायी सरकार को समाप्त करने के लिए यह कोई सामान्य सैन्य तख्ता पलट नहीं था। आपको स्मरण होना चाहिए कि हालांकि यह अक्तूबर क्रांति के नाम से प्रसिद्ध है किंतु यह क्रांति 7 नवंबर, 1917 को हुई और इसे 7 नवम्बर को मनाया गया क्योंकि इस क्रांति के बाद रूस ने अंतर्राष्ट्रीय

कैलेंडर अपनाया। इससे पहले रूस अपने स्वयं के कैलेंडर का उपयोग कर रहा था जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उपयोग में लाए जा रहे कैलेंडर से 10 दिन पीछे था।

23.11 इस क्रांति की नीतियाँ और प्रभाव

क्रांतिकारी रूस ने न सिर्फ जार की रूस संबंधी नीतियों को बदल दिया बल्कि इसने और भी कई कार्य किए जो यूरोप के पूँजीवादी राष्ट्रों में मौजूद चीजों से भिन्न और अधिक थे। इसकी नीतियों ने रूस में साम्यवाद की नींव डाली।

इस बात को अच्छी तरह से जानते हुए कि लोग युद्ध से थक चुके थे और वे शांति चाहते थे तथा यह युद्ध किसी भी राष्ट्र के लोगों के हित में नहीं था, उसका सबसे पहला कार्य इस युद्ध से हटना था।

बोल्शेविको ने उत्पादन साधनों, अर्थात भूमि, फैक्टरियों, और बैंकों में निजी सम्पत्ति समाप्त कर दी, इन सबको राष्ट्रीयकृत कर दिया गया तथा अब ये राज्य के स्वामित्व में थीं, न कि निजी स्वामित्व में। इसका अर्थ हुआ कि वे दूसरों की मेहनत का शोषण करने के आदी नहीं हो सकते तथा निजी लाभ प्राप्त नहीं कर सकते। निर्णय लेने वाली प्रक्रियाओं में श्रमिक संगठनों का बोलबाला होता था।

नवम्बर 1917 की भूमि डिक्री के माध्यम से जमींदारी समाप्त कर दी गई थी और पैतृक उपयोग के लिए भूमि किसानों को सौंप दी गई। किसान इस भूमि को बेच नहीं सकते थे अथवा गिरवी नहीं रख सकते थे अथवा दूसरों की मेहनत का शोषण करने के लिए इसका उपयोग नहीं कर सकते थे परन्तु वे अपनी भूमि के स्वामी थे और इस भूमि से अपनी मजदूरी और उत्पादन का पूरा लाभ उठा सकते थे। वे किसी भी तरह से पूर्ववर्ती जमींदारों पर निर्भर नहीं थे। ग्रामीण अर्थव्यवस्था और समाज पर से जमींदारों की शक्तियां समाप्त कर दी गई थीं।

इन उपायों का अर्थ था कि रूस के लोग देश के संसाधनों और अर्थव्यवस्था से समान रूप से लाभान्वित थे। सभी भागों और वर्गों के लोगों के लाभ के लिए केन्द्रीय रूप से योजना बनाना भी अब संभव हो गया था। केन्द्रीयकृत योजना बनाने की इस प्रणाली को महत्त्वपूर्ण समझा गया तथा भारत सहित कई राष्ट्रों द्वारा इसे अपनाया गया।

नए संविधान में निःशुल्क चिकित्सा सुविधा, सभी को निःशुल्क तथा समान शिक्षा, बेरोजगारी भत्ता, संस्कृति और सांस्कृतिक प्रगति के लिए समान पहुंच की गारंटी दी गई थी। यह सब कुछ तत्काल उपलब्ध नहीं था, परन्तु सबके लिए इसका अधिकार बनाकर नए शासन ने अपनी नीति और वचनबद्धता के दिशा–निर्देश स्पष्ट रूप से दर्शाए। वेतन तथा राज्य द्वारा उपलब्ध कराई गई सुविधाओं की पात्रता दोनों के अनुसार अन्य देशों की तुलना में मध्य वर्ग के काम करने वाले लोगों और खेतों अथवा फैक्टरियों में काम करने वाले लोगों में कोई ज्यादा अंतर नहीं था। जीवन स्तर इस बात पर निर्भर नहीं था कि किसी व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से कितना भुगतान करना पड़ सकता है, क्योंकि बहुत सारी चीजों के लिए भुगतान करना ही नहीं पड़ता।

महिलाओं को समान नहीं समझा जाता था इसलिए सामाजिक और राजनीतिक जीवन में उनकी समान भागीदारी संभव बनाने के लिए मातृत्व छुट्टी, सरकारी कैंटीनों, कार्य स्थलों आदि में निःशुल्क पालना घर खोलने संबंधी उपाय किए गए।

वे अपनी स्थिति को 'श्रमिक वर्ग की तानाशाही' समझते थे, क्योंकि काम करने वाले साधारण लोग और उनका कल्याण राजनीतिक तथा नीतियों पर आधारित था।

नई शासन प्रणाली ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध स्वतंत्रता संघर्षों को नैतिक तथा भौतिक सहायता प्रदान की तथा सभी राष्ट्रों को अपने भविष्य का निर्धारण करने के अधिकार को मान्यता प्रदान की। इस कारण से सभी एशियाई देशों में रूसी क्रांति की प्रशंसा की गई तथा संपूर्ण विश्व में लोग इससे प्रेरित हुए। चीन और भारत रूसी क्रांति से अत्यधिक प्रभावित हुए। इससे साम्यवादी विचारधाराओं का प्रचार हुआ था।

भारत के राष्ट्रीय नेताओं ने राजनीतिक संघर्षों में किसानों और श्रमिकों के हस्तक्षेप के महत्त्व को जाना। भारत के लोगों ने अनुभव किया कि रूस में 'किसान मजदूर राज' की स्थापना की गई है। अतः 1920 में श्रमिकों और किसान पार्टियों, ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस का गठन हुआ तथा भारत में श्रमिकों और किसानों को संगठित करने के प्रयासों में वृद्धि हुई।

तथापि साम्राज्यवादी राष्ट्रों ने इस क्रांति का विरोध किया और उन्होंने नई बोल्शेविक शासन प्रणाली को पराजित करने के लिए अपनी सेनाएं भेजी। वे सफल नहीं हुए तथा नई क्रांतिकारी शासन प्रणाली मुख्य रूप से लोगों की सहायता और क्रांतिकारियों के आत्मबलिदानों के कारण बची रही। रूसी क्रांति और प्रथम विश्व युद्धकी समाप्ति के बाद रूस और यूरोप में क्या हुआ यह एक अलग कहानी है, जिसके बारे में आप अगले पाठ में पढ़ेंगे।

पाठगत प्रश्न 23.2

1. इस क्रांति से पहले रूस में कौन–सी राजनीतिक प्रणाली थीं?

   ____

2. 1917 की रूस की क्रांति के दूसरे किस नाम से रूप में जाना जाता है?

   ____

3. जार के समकालीन रूस के महत्त्वपूर्ण राजनीतिक समूहों के नाम लिखिए?

   ____

4. निजी सम्पत्ति की समाप्ति का क्या अर्थ है?

   ____

आपने क्या सीखा

प्रथम विश्व युद्ध इतिहास के पिछले युद्धों से बिलकुल भिन्न था, क्योंकि इसकी हिंसा और पीड़ा से सारा विश्व प्रभावित हुआ था। युद्ध में नई प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया गया था, जिन्हें पहले नहीं देखा गया था और इसका जीवन के सभी पहलुओं पर प्रभाव पड़ा।

इस युद्ध के कारण तात्कालिक तथा दीर्घावधि के थे। उपनिवेशों हेतु होड़, विश्व के संसाधनों पर नियंत्रण करना इसके मुख्य कारण थे। यह युद्ध 1914 से 1918 तक चलता रहा तथा जर्मनी और सहयोगी राष्ट्रों की पराजय के बाद समाप्त हुआ। इसके समाप्त होने से पहले 1917 में रूस की क्रांति हो चुकी थी। रूस की क्रांति युद्ध के दबाव और रूसी समाज में चल रहे संघर्षों के कारण आई। यह इतिहास में पहली साम्यवादी क्रांति थी।

इसके तीन चरण थे : 1905 की क्रांति जो असफल रही; फरवरी 1917 की क्रांति के परिणामस्वरूप अभिजात वर्ग की समाप्ति; और अक्तूबर 1917 की क्रांति जिसका नेतृत्व बोल्शेविकों ने किया। इसने साम्यवादी राष्ट्र की स्थापना की।

इस क्रांति ने सामाजिक न्याय पर आधारित नई सामाजिक और राजनीतिक प्रणाली बनाई। अपनी राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाले राष्ट्रों सहित शेष विश्व पर इसका अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

पाठांत प्रश्न

1. जार कालीन रूस की राजनीतिक प्रणाली का उल्लेख कीजिए? किसान अभिजात वर्ग से असंतुष्ट क्यों थे?
2. विभिन्न राष्ट्रों ने विद्रोह क्यों किया?
3. 1905 की क्रांति क्यों महत्त्वपूर्ण थी?
4. रूस में फरवरी 1917 में क्या हुआ?
5. बोल्शेविकों द्वारा लाए गए मुख्य परिवर्तन के बारे में लिखिए। क्या आप समझते हैं कि ये रूस के लोगों के हित में थे?
6. भारत पर इस क्रांति के प्रभाव के बारे मे लिखिए?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

23.1

1. हवाई जहाज, टैंक और पनडुब्बियां
2. त्रिपक्षीय संधि, त्रिपक्षीय सहयोग
3. 10 लाख मरे, 20 लाख घायल हुए, लाखों शरणार्थी हो गए
4. ब्रिटेन

23.2

1. एकतंत्र

आपकी टिप्पणियाँ

2. बोल्शेविक क्रांति
3. सामाजिक लोकतंत्रवादी, उदारवादी, समाजवादी क्रांतिकारी
4. उत्पादन के साधनों पर राज्य का स्वामित्व था।

पाठान्त प्रश्नों हेतु संकेत

1. 23.4 अनुच्छेद 2 देखें
2. 23.8 देखें
3. 23.10 अनुच्छेद 3 देखें
4. 23.10 अनुच्छेद 5 तथा 6 देखें
5. 23.11 अनुच्छेद 1–7 देखें
6. 23.11 अनुच्छेद 9 तथा 10 देखें

शब्दावली

1. **निरंकुशता** - एकतंत्र ऐसी राजनीतिक प्रणाली जिसमें राजा शासन करता है, जिसके पास सभी शक्तियां होती हैं और जिसमें ऐसा कोई प्रभावशाली प्रतिनिधि संस्थान नहीं होता जो राजनीतिक शक्ति में भागीदारी कर सके।
2. **सामाजिक लोकतंत्र** - जिनका ऐसा मानना था कि मात्र राजनीतिक और विधि समानता ही पर्याप्त नहीं है, परन्तु आर्थिक और सामाजिक समानता भी होनी चाहिए। अतः वे साम्यवाद में विश्वास रखते थे।
3. **पूंजीवाद** - निजी सम्पत्ति और बाजार के अधिकारों पर आधारित प्रणाली है और इसमे निजी लाभ भी होता है। इसमें सम्पत्ति का स्वामी इस पर काम करने वाले श्रमिक के शोषण से अपना लाभ प्राप्त करता है।
4. **साम्यवाद** - ऐसी प्रणाली, जिसमें उत्पादन के साधनों पर राष्ट्र का स्वामित्व होता है ताकि श्रम करने वाले श्रमिक का कुछ लोगों के निजी लाभ के लिए शोषण न किया जा सके और इसमें ऐसी राजनीतिक प्रणाली होती है, जिसमें श्रमिक के हित का पहले ध्यान रखा जाता है।